ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

(ग़ज़लकार ऋषिपाल धीमान के विशेष संदर्भ में)

वर्ष : 14 अंक : 24-25 जनवरी-मार्च-जून 2023 संयुक्तांक

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

अनुक्रम

संपादकीय
प्रो. दिलीप मेहरा 05

1. ऋषिपाल धीमान की ग़ज़लें
2. ऋषिपाल धीमान : तेरे अशआर का हर दिल में उतरना तौबा ! **जय चक्रवर्ती** 10
3. हिंदी-उर्दू के छंदों में भाषाई मुहावरे से सजी ग़ज़लें **राजेन्द्र वर्मा** 13
4. डॉ. ऋषिपाल धीमान 'ऋषि' की ग़ज़लों में रचना-शैली की मर्यादा का वैभव है **संजीव प्रभाकर** 19
5. सार्थक अभिव्यक्ति के अप्रतिम सोपान: ऋषिपाल धीमान 'ऋषि' की ग़ज़लें **द्विजेन्द्र द्विज** 22
6. संजीव प्रभाकर द्वारा डॉ. ऋषिपाल धीमान का साक्षात्कार **संजीव प्रभाकर** 29
7. संसार के आँसुओं को रूपायित करती 'ऋषि' की गजलें **हरेराम समीप** 32
8. डॉ. ऋषिपाल धीमान की ग़ज़ल 'देता हूँ' का रसदर्शन **डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' 'दीप्ति गुरु'** 37
9. ऋषिपाल धीमान ''ऋषि'' की ग़ज़ल ''मुझे समझता है'' का रसदर्शन **डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' 'दीप्ति गुरु'** 39
10. मेरी दृष्टि में 'रास्ता दिल का' **डॉ. साएमा बानो** 41
11. 'रास्ता दिल का' बनाम अंधकार से प्रकाश की ओर **प्रो. भगवानदास जैन** 43
12. समसामयिक समाज के विविध रंगों की बेबाक अभिव्यक्ति : काला सच **डॉ. धीरज वणकर** 47
13. स्वाधीनता आंदोलन और प्रेमचंद की कहानियाँ **वणकर भाविनकुमार अंबालाल** 51
14. आदिवासी जीवन और 'बेघर सपने' **डॉ. दिलीप मेहरा** 54
15. स्वाधीनता आंदोलन और दलित उपन्यास **वाघेला ऐश्वर्याकुमारी के.** 58
16. स्वाधीनता आंदोलन और दलित साहित्य **वणकर रमेशकुमार के.** 60
17. कहानीकार महीप सिंह की कहानियाँ में राजनीतिक परिवेश **मणवर मीराबेन आर.** 62
18. संत साहित्य में समरसता के उदगार **डॉ. कमलेश सिंह नेगी** 65
19. नासिरा शर्मा की कहानियों में मुस्लिम रूढ़िवादी समाज में पिसती नारी **मोरावाला सोहेल आई.** 68
20. थराद तहसील के भीलों की संस्कृति और समाज **डॉ. कानजीभाई रवजीभाई पाया**
21. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी उपन्यास **दवे वासुदेव रतिलाल**
22. डॉ. जयदीप शाह की कविता 'वादा-ए- वफ़ा' का रसदर्शन **डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' 'दीप्ति गुरु'**
23. डॉ. नीतीन वोरा की साहित्यिक खूबियों का संस्कार अलकंरण यानी उनका 'अर्थनी शोधमां' गुजराती काव्य संग्रह **डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़' 'दीप्ति गुरु'**
24. 'आखिरी छलाँग' उपन्यास की मूल संवेदना **झाला सुरेश भाई नटुभाई**
25. अंबेडकरी चिंतन का दस्तावेज : शिकंजे का दर्द **शालिनी उदयराज चौहान**
26. नागार्जुन की कविताओं में चुनाव की प्रक्रिया एवं उसके का **डॉ. कानजीभाई रवजीभाई पाया**
27. कृष्णा रघुवंशी के उपन्यासों में नारी संबंधी मिथक क आधुनिक संदर्भ में प्रयोग **नरेशकुमार जे. ठाकोर**
28. हिन्दी हाइकु कवयित्रियाँ : एक सर्वेक्षण **मोरावाला साइनबानु आई.**
29. 'साकेत' महाकाव्य का दृष्टि बिंदु **डॉ. धर्मेन्द्रसिंह एम. ठाकोर**
30. कहानीकार महीप सिंह की कहानियाँ में सामाजिक संबंध **मणवर मीराबेन आर.**
31. संविधान द्वारा सरंक्षण प्राप्त अनूसूचित जाति के विका एवं कल्याण हेतु संवैधानिक प्रावधान **डॉ. नीता भारती विभागाध्यक्ष**
32. गोदान : भारतीय गाँव के किसान की व्यथा-कथा का दस्तावे **डॉ. निशा रम्पाल**
33. व्यापार मंदिर, गबन बनाम छः बीघा जमीन **प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल**
34. परमाणुविक यूरेनियम विकिरण की समस्याओं पर जुड़ा 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' **डॉ. निशा रम्पाल**

कविता

- राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
- अधूरी हिकायत **जिगर काछीआ**
- किन्नर जीवन का अभिशाप **डॉ. अनु पाण्डेय**
- अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी मुंशी प्रेमचंद **डॉ. संगीता चौहान**
- आओ भारतीयता का करें निर्माण **देवेन्द्र प्रताप सिंह**

14

आदिवासी जीवन और 'बेघर सपने'

❖ डॉ. दिलीप मेहरा

निर्मला पुतुल आदिवासी आवाज की सशक्त हस्ताक्षर है। उन्होंने अभी तक हिंदी साहित्य को तीन काव्य संग्रह दिए हैं। जो क्रमशः इस प्रकार है– 'नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द', 'अपने घर की तलाश में' और 2014 में 'बेघर सपने' जो आधार प्रकाशन पंचकूला हरियाणा से प्रकाशित हुआ है। इस काव्य संग्रह में 52 कविताएं संकलित हैं जिनमें अधिकतर कविताएं आदिवासी जीवन की पीड़ा, संघर्ष को बयान करती हैं। साथ–साथ अन्य कविताओं में भारत की स्त्रियों के संघर्ष को उजागर करने का प्रयास किया है। इनकी कविता में जल, जंगल, जमीन और विस्थापन की चर्चा अवश्य मिलती है। निर्मला पुतुल उन कवयित्रियों में से हैं जिन्होंने अपने यहां दो अस्मिताओं आदिवासी और स्त्री संघर्ष को जबरदस्त रूप में उठाया है। यहाँ आदिवासियों के समाज का बर्बरतापूर्ण इतिहास है, संघर्ष और अंधकार है। क्योंकि निर्मला जी एक स्त्री हैं इसलिए यहां संघर्ष दोहरा है। एक आदिवासी स्त्री का जीवन, संघर्ष, दुःख और उसकी पराजय–सब यहां बहुत ही विश्वसनीय रूप में उजागर हुआ है। इन कविताओं में विचार है या कई वर्षों से चला आ रहा पूरा विमर्श है। परंतु यह कभी भी विमर्श की कविता नहीं लगती है। निर्मला जी की कविताओं को जितना उनका विषय, संघर्ष और दुख विश्वसनीय बनता है उससे कहीं ज्यादा उनके शब्दों का चयन। यहाँ ऐसे ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है जो विशुद्ध लोगों के हैं और जिन्हें लगभग हम विस्मृत कर चुके हैं। इनकी 'सबसे डरावनी रात' कविता यौन शोषण से ओतप्रोत है। आदिवासी समाज एक बोतल दारु और मुर्गी के बदले में लड़कियों को बेचने या शैतानों के सामने परोसने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं करता। अपनी ही मां, बोतल भर दारू और एक मुर्गे के कारण अपनी लड़की का सौदा करती है। उसका चित्रण करती हुई कवयित्री लिखती है–

"यह काली अंधेरी सबसे डरावनी रात
घुस आई तुम कमरे में
गोरे चिट्टे चमड़े वाले उस अधेड़ पुरुष के साथ
ढिबरी की काँपती लौ और सन्नाटा
और तुमने मेरी तरफ इशारा करते हुए
क्या तो कहा था
और तुम्हारी उंगली उठी मेरी ओर
मैंने अपनी आंखें मूंद ली
मामला साफ था
और सब कुछ तय हो चुका था
सौदा किया था तुमने मेरा
महज बोतल भर दारू और एक मुर्गे पर

कैसे भुला दूं उस रात की दास्तां
कि कोई और नहीं
जन्म देने वाली मां तुमने
जिसने मुझे नौ महीने अपनी कोख में पाला
प्रसव पीड़ा सहा दुष्कार
और तुमने ही उस वहशी कुत्तों की रात में
मुझे एक भेड़िए के हवाले कर दिया
कैसे भूल जाऊं वह राक्षसी रात
जिसमें दुनिया की सारी संवेदनाएं
मेरा सबसे ऊंचा विश्वास
पवित्र रिश्ते की आस्था
सब कुछ लुट गया
यह क्या था
मेरी समझ में कुछ तो नहीं आता
क्या था यह
आखिर क्यों हुआ ऐसा
बोलो न माँ, चुप क्यों हो?"[1]

गुजरात के खेडब्रह्मा के पूर्व गांव,जो राजस्थान की बॉर्डर के नजदीक है उन गांव में पचास रुपयों में